छोटानागपुर का कोल विद्रोह

डा० नन्द कशोर राम

पी–एच०डी०, नेट

बी०आर०ए०बी०यू० मुजफ्फरपुर।

***Abstract*:**

1831–33 के बीच छोटानागपुर क्षेत्र में दो भीषण विद्रोह हुए। पहला कोल विद्रोह एवं दूसरा भूमिज विद्रोह। कोल विद्रोह जिसमें तत्कालीन रामगढ जिले के मुण्डा, उराव एवं पलामू क्षेत्र के महली, खड़वार एवं चेर आदि ने सक्रिय भाग लिया था।

Keywords: कोल विद्रोह, छोटानागपुर, कर, जनजातिय समाज, खेती, भूमिज

Discussion

रामगढ जिले के मुण्डा, उराव एवं पलामू क्षेत्र के महली, खड़वार एवं चेर आदि इन सभी जनजातियों को छोटानागपुर के मैदानी लोग कोल कहते थे इसलिए इसे कोल विद्रोह के नाम से जाना जाता है।[1]

इस विद्रोह को भड़कने का मूल कारण जमीन से संबंधित था। खेती और शिकार इन जनजातिय समाज का अपना मुख्य पेशा था लेकिन जब इस्ट इंडिया कंपनी ने इन क्षेत्रों पर अपना अधिकार किया तो इन क्षेत्रों के जनजातियों से काफी मात्रा में कर वसूला जाने लगा। इन आदिवासियों के द्वारा कर अदा नही किये जाने पर इनका जमीन निलाम कर लिया जाता था या छीन लिया जाता था और इस जमीन को गैर आदिवासियों जैसे मुसलमानो एवं हिन्दुओं को खेती के लिए दे दिया जाता थ जिसके कारण इनकी आर्थिक स्थिति काफी बिगड़ती चली गई।[2]

ये कोला आदिवासी जब अपनी समस्याओं को लेकर इस्ट इंडिया कंपनी की सरकार से सहानुभूति की आश करके उनसे मिलने जाते थे तो वहाँ भी उनसे सहानुभूति की आशा नही थी क्योंकि उनकी पुलिस भ्रष्ट थी उनके अमला घूसखोर थे और उनके छोटे अफसर आदिवासियों को लूट रहे थे।[3]

मूल कारण के अलावे कोल जनजातियों के विद्रोह के कई सामाजिक कारण दृष्टिगोचर होते है जिसके कारण विवश होकर कोल जनजातियों ने ब्रिटिश इस्ट इंडिया कंपनी के विरूद्ध विद्रोह का बिगुल फूंका था। जो इस प्रकार है–

छोटनागपुर के महाराज के भाई हरना शाही कोल जनजातियों के जमीन को अपने कब्जे में करके अपने मित्र मुसलमान एवं सिखो को दे दिया।

सिंहभूम क्षेत्र से सटे बारह गाँव सिंगराय मनकी के जमीन छीन लिए गए एवं उनके दो बहनों के साथ सिक्खों ने बलात्कार किया जफर अली नाम के गैर जनजातियों ने बारह गाँव के मुण्डा सुरगा पर अत्याचार किया और उसकी पत्नी को उठाकर ले गया। इस घटना से अपमानित होकर सिंगराय और सुरगा ने अपने समुदाय के लोगो की सभा बुलाई एवं 700 कोलो ने इस घटना का बदला लेने के लिए[4] इन अत्याचारियों पर आक्रमण किया।

अंग्रेजों ने कोलो के सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया जो उनके नीति के बिल्कुल खिलाफ था इतना ही नहीं छोटानागपुर के कोल आदिवासियों के ब्रिटिश इस्ट इंडिया कंपनी से इस बात का असंतोष था कि उनके द्वारा चावल से निर्मित कम नशीले शराब (हड़िया) पर 1830 ई0 में उत्पाद शुल्क लागु कर दिया गया जो प्रति घर चार आने होता था। आदिवासियों द्वारा चावल से निर्मित हडिया पर टैक्स लगाकर इन क्षेत्रो में जबरन अफीम उगाया जाने लगा।[5] इतना ही नहीं अंग्रेजों ने एक दूसरे से लड़वाकर उसे कमजोर करने का प्रयास भी किया। परन्तु आदिवासियों ने संगठित होकर काम किया और कोलो ने अपने प्रमुख नेता सिंदाराय मानकी, विन्दा राय मानकी एवं बुद्धो भगत के नेतृत्व में ब्रिटिश इस्ट इंडिया कंपनी के विरूद्ध 1831 में विद्रोह कर दिया। कोलो के प्रधान या नेता को ‘‘मानकी’’ कहा जाता था जो अपने गाँवो को प्रतिनिधित्व करते थे।[6]

कोल विद्रोह भड़कने से बड़ी संख्या में गाँवों को नुकसान हुआ। गाँव के गाँव जला दिया गया देखते ही देखते यह विद्रोह झारखण्ड के राँची, हजारीबाग के टोरी परगने तथा मानभूम के परिचारी भाग तक फैल गया। लगभग 800–1000 लोग इस विद्रोह में मारे गए।[7] जमींदार वर्ग के लोग इस विद्रोह से काफी प्रभावित हुए। अंग्रेजो को यह भय हो गया था कि विद्रोह और अधिक आक्रमक न हो जाए इसलिए अंग्रेजों ने रामगढ से सेना बुलाई साथ ही बनारस, बैरकपुर एवं दानापुर से भी सेना बुलायी गई। जमींदारो ने भी अपनी सेना भेजी। कैप्टन विलकेन्सन के नेतृत्व में काफी बड़ी सेना के द्वारा इस विद्रोह को दबाने का प्रयास किया गया। विद्रोहियों ने दो माह तक डटकर इनका मुकाबला किया।[8] लेकिन अंग्रेजो के आधुनिक अस्त्र–शस्त्र से लैश पैदल और घुड़सवार सेना, बंदूके और तोपे थी जबकि विद्रोहियों के पास सिर्फ परम्परागत हथियार जैसे तीर–धनुष फरसे थे। किसी–किसी के पास देशी बंदूके थी जिसके कारण वे अंग्रेजों का डटकर सामना नही कर सके। जिसके कारण बड़ी संख्या में विद्रोही मारे गए जबकि ब्रिटिश सेना के मात्र 16 जवान मारे गए। तीरों के घाव से मारे जाने वाले एक साईन मैकलायड भी थे।[9]

मारे जाने वाले विद्रोहियों कि संख्या बहुत बड़ी थी। इसमें विद्रोहियों के प्रमुख नेता बुद्धो भगत भी थे। इसके साथ ही उनका बेटा, भतीजा एवं 150 अनुयायी भी मारे गए थे। अंत में विवश होकर सिंगराय मानकी एवं विन्दा राय मानकी ने 1832 में आत्मसमर्पण कर दिया।[10] इस प्रकार आदिवासियों के गाँव जलाए गए और उनके निवासियों को कत्ल किया गया। एक अंग्रेज के अनुमान के अनुसार कोल विद्रोह को कुचलने में लगभग 5000 वर्गमील भूमि वीरान कर दी गई।[11] कर्नल रिचर्ड ने इस विद्रोह को पूरी तरह समाप्त कर दिया।[12]

इस विद्रोह का प्रभाव व्यापक रूप से आदिवासियों एवं गैर आदिवासियों जिसमें आदिवासी लोग दिकू कहते थे पर पड़ा। कोल विद्रोह का मुख्य शिकार नवोदित जमींदार, सूद का धन्धा करने वाले महाजन, भल्ला तथा नमक व्यापारी, भूस्वामी एवं कई वसूली करने वाले कर्मचारी बने। तत्कालिन रिपोर्ट बतलाता है कि इस वर्ग के लोगों की हत्या एवं लूट–पाट इतने व्यापक स्तर पर हुआ कि माहौल सामान्य होने के बाद भी वर्षो तक गैर आदिवासी वर्ग के सम्पन्न लोग भयाक्रांत रहे। कोलो विद्रोह के दौरान उत्पीड़न तथा विध्वंश की अति कर दी। एक बालक को छोटे–छोटे टुकड़ो में काट डाला गया। गर्भवती महिलाओं तथा अबोध बालक एवं बालिकाओं की निर्मम हत्या की गई तथा पलायन कर रहे कई मुस्लिम परिवारों को मौत के घाट उतार दिया गया, इतना ही नहीं, पहाड़ो एवं जंगलो में छिपे सैंकड़ो गैर आदिवासियों की सुरक्षा की गारंटी देकर पहले गाँवो में बुलाया गया और बाद में उसकी हत्या कर दी गई। कई सम्पन्न गैर आदिवासी से प्राण रक्षा के बदले बड़ी राशि वसूली गई और बाद में उसे मार डाला गया। एक घटना में एक परिवार के सभी महिला एवं बच्चों को जला दिया गया। निर्ममता की प्रकास्टा का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि कई बार लोग मृतक के परिजनों को शव विसर्जन से रोका।

कोल घृणा का सबसे अधिक शिकार उच्चजाति के लोगो के अलावे जुलाहा, कुर्मी, कहार, अग्रवाल, बनिया, दुसाध, कलवार, सूडी तथा तेली बने। परन्तु गैर आदिवासियों में कुछ जातियाँ जैसे बढई तथा लुहार आदि जातियों को न सिर्फ हमलों से बचाया बल्कि उनके पलायन को रोकने की कोशिश भी किया, क्योंकि बढई तथा लुहार आदि जातियाँ आदिवासीयों को तीर, भाला, फरसा, के निर्माण में सहयोगी थे जबकि ग्वाले की उपयोगिता दूध के क्षेत्र में थी। अनेक अवसरों पर इन गैर आदिवासियों को हिंसक गतिविधियों में भाग लेने के लिए भी विवश किया गया। इस विद्रोह में जान–माल की क्षति से अधिक करीब 4000 मकानों एवं कचहरियों को जला दिया गया। आदिवासी अनाज तथा पशुओं को लेकर जंगल में बसे तथा दो महीनो तक अपना संघर्ष जारी रखा। कोल विद्रोह के पराजय के बाद यद्यपि उतरी क्षेत्र के अधिकांश विप्लवकारी शिथिल पड़ गये तथापि पश्चिमी तथा दक्षिण क्षेत्र में आंदोलन पूर्व के भांति आक्रमक बना रहा। कोलो ने पलामू के घाटियों में अंग्रेजी सेना को बुरी तरह शिकस्त दी। लेस्लीगंज में

अंग्रेजों को पूरी तरह पीछे हटने के लिए बाध्य हुए इतना होने के बावजूद भी कोलो को अंग्रेजी सेना के सामने पीछे हटने को मजबूर होना पड़ा। क्योंकि उनके पास अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए आधुनिक अस्त्र–शस्त्र का अभाव था। फिर भी उन्होंने अंग्रेजों से वीरता पूर्वक लड़ते रहे लेकिन विवशता और मजबूरी ने उन्हें पीछे हटने के लिए बाध्य कर दिया। अगर इनके पास अंग्रेजों के समान आधुनिक हथियार होता तो भारत का इतिहास कुछ और होता लेकिन इन कोल आदिवासियों का संघर्ष व्यर्थ नही गया अंग्रेजो के द्वारा जो कोल आदिवासियों के स्थिति में सुधार के लिए कई प्रयास किये गए।[13]

इस विद्रोह की विशेषता यही रही कि इस विद्रोह के बाद दक्षिण पश्चिमी सीमांत एजेंसी के नाम से एक अलग इकाई बनाई गई तथा इस क्षेत्र को नन रेगुलेशन जिला घोषित किया गया। कोल विद्रोह के दमन के बाद ब्रिटिश सरकार ने इन क्षेत्रों में अनेक प्रशासनिक परिवर्तन किये जिसका मुख्य उद्देश्य था पिछड़े क्षेत्र के प्रशासन के सरल एवं लचीला रूप देना। 1833 के रेगुलेशन–13 के माध्यम से कंपनी का अप्रत्यक्ष शासन समाप्त हो गया। रामगढ़ हिल ट्रैक्ट से छोटानागपुर पठार को दक्षिण–पश्चिम सीमांत एजेंसी का अंग बनाया गया उसे दीवानी, फौजदारी, न्यायिक पुलिस निरीक्षण एवं भूमि कर हेतु विशेष नियमों के तहत रखा गया।[14]

इस प्रकार कोल विद्रोह ने आदिवासी समाज में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध एकत्रित होकर अपने अधिकार के लिए लड़ता रहा। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पूर्व के आंदोलनो में कोल विद्रोह का अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह विद्रोह भारत एवं बिहार के इतिहास में हमेशा अविस्मरणीय रहेगा।

संदर्भ सूची :–

1. बिहार एक परिचय– शशिभूषण चौधरी, पृष्ठ–97
2. विल्सन मिल्स हिस्ट्री ऑफ इंडिया, खण्ड–3, पृष्ठ 334–54
3. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार का योगदान।
   सूचना एवं जनसंपर्क विभाग पटना, पृष्ठ–09
4. एम०एल०एस०ओ० मैरी, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर सिंहभूम, सरायकेला एवं खरसवान पृष्ठ–35
5. वहीं
6. भारत का मुक्ति संग्राम अयोध्या सिंह उपाध्याय पृष्ठ–224
7. भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार का योगदान।
   सूचना एवं जनसंपर्क विभाग पटना पृष्ठ–16
8. बिहार एक परिचय शशिभूषण चौधरी, पृष्ठ–104

9. एम०एल०एस०ओ० मेरी : बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, सिंहभूम, सरायकेला एवं खरसवान पृष्ठ–337
10. वहीं, पृष्ठ 337
11. शॉटनोट खंड–2 शशिभूषण चौधरी, पृष्ठ–97–98
12. बिहार एक परिचय, शशिभूषण चौधरी पृष्ठ–104
13. 1857 की जनक्रांति सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ 68–69
14. वही पृष्ठ–69